मिथिलानाटक

तथा

दूताङ्गदव्यायोग

लेखक

साहित्यरत्नाकर

मुन्शी रघुनन्दन दास

सम्पादक

श्री नरेन्द्रनाथ दास 'विद्यालंकार'



मैथिली अकादमी, पटना

प्रथम संस्करणक

भूमिका

'मिथिलानाटक' मे संस्कृत 'साहित्य दर्पण' इत्यादि मध्य कथित लक्षणक अनुसार अंक पात्रादिक नियम नहि अछि, तावता ताहि महोदयगणक समीप नाटक बुद्धिएँ आदृत हो वा नहि, किन्तु आइ-काल्हि आन देशक कोन जे मिथिलहुँमे प्राय: गोटेक एहन ग्रामाभास होएत जाहि महँक रहनिहार नाटक नहि बुझैत होथि । कारण मिथिलहुँमे तँ अनेक गोटै नाटक-मण्डली स्थिर कै शकुन्तला, हरिश्चन्द्र इत्यादि करैत छथि, जाहि नाटक सबहिक आधार हिन्दी भाषामय थोड़ मूल्यक किताबे होएत । ई असमञ्जस जानि परम चतुर भाषाप्रवीण देशकालज्ञ सखबाड़ ग्राम निवासी मैथिल करण कायस्थ्थ वंशावतंस मुन्शी श्री रघुनन्दन दास सांप्रतिक मिथिला देश मध्य रहनिहार जनताक अधिकांश मैथिल ब्राह्मण ओ करण कयस्थक चरित्रकेँ देखि-बुझि ई मिथिला नाटक आलस्य, द्वेष, ईर्ष्यादि रोगसँ ग्रस्त लोकनिक हेतु महौषधि बनौलैन्ह अछि । एतावता आशा नहि जे उक्त रोगक आक्रमण रोकल जाए, हँ, ई कहि सकैत छी जे जँ एही रूपेँ अन्यान्यो चतुर उत्साही लोकनि एहने-एहन नाटक, गीत, पिहानी, फकड़ा बनाए प्रकाशित कराबथि ओ ताहि सबहिक प्रचार पूर्ण रूपेँ हो तँ उक्त रोगक प्रहारसँ मिथिलाकेँ निस्तार होएतन्हि । थोड़ेक दिन हमहूँ एही ओषध सबहिक यत्नमे लागि 'मिथिलामोद' मासिक पत्रक प्रचारमे उद्यत छलहुँ, परन्तु फल एतबे जे मिथिला भाषाक प्रचार कलकत्तामे उदार महोदयक आश्रय पाबि होबै लागल । की कैल जाए । अवस्थाक शैथिल्य ओ अनेक कार्यक भार तथा बीचहिमे पाश्चात्य युद्ध इत्यादि कारणेँ महार्घता-पिशाचिनी आबि 'मि० मोद' हि पर टकटकी लगौलक । एहि कारण-कूट कै पाबि रुग्ण 'मि० मोद०' कुहरैत छथि ! तेँ चिन्तित ओ खिन्न अवस्थामे पड़ल हमरहि उपर उक्त नाटकक शोधन ओ मुद्रणक भार देल गेल, तखन जेहन होबै बुझै तादृश विकृत लघु बुद्धिऐँ देखि कोनहुना छपि गेल अछि । अत: पर दिनानुदिन सुबुद्ध महोदयगण एहि नाटककेँ शुद्ध करताहे, प्रत्युत गम्भीर बुद्धि प्रभावसँ अनेक लोकोपकारक नाटक, प्रहसन बनाए बनाए सुयश: पताका फहरौताह तथा देशक अभ्युदयो करताहे । यद्यपि अपन देशमे प्राचीन कालहु मध्य नाटकाभिनयक प्रचार छल जे 'किर्तनिञा' नटुआ करैत छल- यथा 'पारिजातहरण', 'उषाहरण' इत्यादि, किन्तु ताहि सबहिमे संस्कृत साहित्यादिक प्राय: गूढ़ाशयक संनिवेश ओ सकल साधारणक उपकारक आशा नहिएँ जकाँ, तेँ देशक पैघ-पैघ पण्डितजी लोकनिक एहि रूपक

सदुपदेशसँ जनता वञ्चिते रहैत अछि तथा पण्डितोजी सबहिँ सम्प्रति जीविकहिकैँ माथ लगाए आत्मरक्षा करैत संस्कृत-वाणीकेँ जिऔने जाइत छथि, तावता एहि उपकार प्रयुक्त धन्यवादार्हता उक्त नाटककारकहिक उपर जाइछ ई कोना नहि बाजल जाए। कण्टकादि-दोष प्रयुक्त अनेक स्थल मध्य अशुद्धि रहि गेल होएत, ताहि सबहिक दोषी नाटककर्त्ता नहि प्रत्युत ओ सब हमरहि उपर थोपि थापि कृपया हमर ई विचित्र भूमिका (रूपान्तर) अवश्य देखि लेब ।

अपने सबहिक अनुग्रहाभिलाषी

श्री मुरलीधर झा

'मिथिलानाटक'क
पात्र-सूची

सूत्रधार	हरिया
नटी	ज्ञानदत्त
कलि	बबुजन
भृत्य	मिथिला
मन्त्री	सुमति
क्रोध	विद्या
लोभ	ऐक्य
पिशुन	दु:साहस
ईर्ष्या	दुर्मुख
दरबान	क्रोधी
आलस्य	क्रोधीक स्त्री
सिपाही	भोलबा
मैथिल १	बाल कृष्ण
मैथिल २	नेबालाल
दासी	दिवानजी
कुम्हार (रामू)	दरबारी १
कुम्हार (सोनू)	दरबारी २
बंगाली पंडित	बबुआजी
काशीक पंडित	अनाचार
लकड़िहारा	आलस्य
घसिहारा	सीता
सन्तोष	सुतनिहार १
धर्म	सुतनिहार २

मिथिला-नाटक

प्रथम अङ्क

श्रीपति-पदपङ्कज कर दुइसौँ सेबइत मन वच धैने ।
नैहर-नेह-निरत तसु अवनति गति बुझि शोक समैने ।।
पतिहि प्रबोध चाह चित जागृत लखितहि पुलक पुनीता ।
सकल कामना-सिद्धि करथु से रामचन्द्र सह सीता ।।

(नान्दी पाठ भेला पर)

सूत्रधार– बस बस, अधिक वागाडम्बर व्यर्थ, (**कहैत सभाक दिशि देखि**) आजुक ई सभा त सौराठहुक सभासँ विशेष शोभामान देखना जाइछ, ओहि सभामध्य घटक सबहिक चटक–चातुरी वाचालता सँ वरक आतुरतें तथा कन्याप्रदक लोलुपतें कथा–कथान्तरक गनगनाहटि, तदुत्तर कथा पटला पर फरक गनौअलिक झनझनाहटिक सङ्ग–सङ्ग सम्पत्तिशाली महोदयक घोड़ाक हनहनाहटिओ बोध नहि होइछ । एहि सभामध्य सज्जनसमाजकेँ अभिनयावलोकनक तत्परता सँ तेहन विस्तब्धता भै रहल अछि जे सूची–निपातक खनखनाहटिओ कर्णगोचर भै सकैछ । यद्यपि आइ हम शुद्धक आर्त्तियेँ सौराठहि जैबाक हेतु यात्रा कैल परन्तु एहि सभाक विलक्षणता देखि हमर गतिए स्तम्भित भै गेल । एहन सकल गुणागार सज्जनसमाजसँ सुसज्जित सभाक अवहेला करबो अविधेये थिक तैँ सौराठ जैबासँ निवृत्त भै सभास्थ सज्जन–समाजक मनोरञ्जनार्थ कोनो अभिनय करब उचित बोध होइछ परन्तु एहि प्रसङ्गक कोनो परामर्ष पूर्व नहिं कैने छी अतएव सम्प्रति गृहिणीकेँ बजाय परामर्श करबाक थिक । (**नेपथ्य दिशि देखि**) प्रिये ! सुसज़्जित वेषेँ एम्हर त आउ ।

[यैह ऐलहुँ कहैत नटीक प्रवेश]

नटी– (सूत्रधारक दिशि कटाक्ष कै) एहि खन सभाक यात्रा कैल अछि; फेरि हमरा कथी लैं बजाओल ?

सूत्र– प्रिये ! यात्रा त कैल, परन्तु ई मनोहारिणी सभा देखि सभास्थ–सज्जन–मनोरञ्जनार्थ कोनो अभिनय करब उचित जानि आइ सभा जैबाक विचार त्यागि अहाँकाँ बजाओल ।

नटी– **(ईषत्क्रोधैँ)** जाउ जाउ, अहाँ कैँ त येह सब रहैत अछि । हम आब नेनिया कैँ नैहुरहि लै जाइत छिऐक, ओतहि काका बिआह कराए देथिन्हि **(कहि गमननाट्य)** ।

सूत्र– सुनू सुनू, खिसिआइ जनु ।

नटी– सुनल सुनल, परसूएधरि शुद्ध । चारिम दिन सँ त यैह सब सुनैत रहब **(कहैत गमननाट्य)** ।

सूत्र– अरे ! किछु सुनिओँ त लिअ ।

नटी– **(क्रोध सँ)** की सुनू ?

सूत्र– अरे ! शुद्धक एखन चारि दिन बाँकी छैक, कन्याकाँ विवाह भावी होएतैक तँ एकहि....**(एतबा कहितहि)** ।

नटी– से त बुझल, आ हम सुनलैक अछि जे चारिम दिन घटक पजिआड़ सभा मे रहबे ने करताह तखन चारिम दिनुक कोन लेखा ।

सूत्र– हँ–हँ, एहि वर्ष मैथिल–महासभाक मन्त्री श्रीमान् मिथिलेशसँ ई आज्ञा प्रचार कराए पूर्वक परिपाटीकैँ नष्ट कयलनि अछि ।

नटी– भला, ओहो चिरजीवी होथु जे ब्राह्मणीक रक्षा कयलनि ।

सूत्र– ई नवसिक्खा अङ्गरेजी पढ़निहार लोकनिक जूति चलतनि तखन ने ।

नटी– किऐक नहि चलतन्हि ? अहाँ लोकनि मन दिअन्हि त अवश्य चलतन्हि ।

सूत्र– बेस, जखन जे होएतैक से बुझल जैतैक । कोन एखन अभिनय होयब उचित थिक तकर विचार त करू ।

नटी– **(उदासीन)** अहीं बिचारू, हमरा त तीनि दिनधरि किछु नहि फुरत ।

सूत्र– **(हाथ पकड़ि)** से किऐक, खिसिआइ जनु । गाँमक समीपहि बेस धनिक कुलशीलसम्पन्न व्याकरण मध्यमा परीक्षोत्तीर्ण वरमे कथा पटले अछि । सभामध्य घटक पञ्जीकारसँ फरकहिक निश्चय करबाक भाङ्ठ ।

नटी– वर नेनौन्हे होथि सैह करब ।

सूत्र– आब त सोड़ह वर्ष सँ न्यून वयस वरक विवाह नहि भ सकैत छनि ।

नटी– से किएक ?

सूत्र– सेहो मैथिल–महासभासँ स्थिर भै गेल छैक ।

नटी– एहि मिथिलामे की की ने भेल अछि ओ की की ने होयत । जे जिउत से देखत ।

सूत्र– **(किछु सोचि)** अहाँक एहि कथासँ अभिनयक परामर्शो भै गेल ।

नटी– से कोना ?

सूत्र– सखबाड़ ग्रामनिवासी मैथिल कर्ण–कायस्थ बलायिनि–वंशोद्‌भूत श्री रघुनन्दन दासक रचित मिथिला–नाटक अहाँक कथाक अनुरूपे अछि तैं हमरा विचारैं ओही नाटकक अभिनय होएब उचित बुझना जाइछ ।

नटी– बेस विचारल, एखनहु धरि धर्म–कर्मक किछु गौरव तँ मिथिलहि **(एतबा कहितहि)**।

[नेपथ्यमे]

सम्प्रति कलिक प्रभाव कतै नहि ईर्ष्यादिक जनि दासी ।
मिथिलहु मुदित बिचर से घर घर के नहि तनिक उपासी ।।

सूत्र– **(सूनि)** अरे ! ई व्यङ्ग वाक्यहि अहाँक कथन असमाप्तहि के अशकुन शब्द सुनौलक ? बुझि पड़ैछ जे मिथिलाक पूर्वक पूर्ण प्रताप बिसरि गेल । **(नेपथ्य दिशि देखि)** रे मूर्ख !

नटी– रहू रहू, एहना कैं हमहिँ उत्तर दैत छिऐन्हि ।

जे मिथिलाभुवि त्रिभुवनरक्षिणि आदिशक्ति प्रकटाय ।
दुर्जन दुष्ट निशाचर जग जत तकरा देल नशाय ।।

से जगदम्ब ताहि रक्षा सँ की आलस चित लाव ।

मिथिलादेश–मध्य की व्यापत क्रूर कलिक परभाव ।।

[नेपथ्यमे]

के हमर निन्दा बाजि रहल अछि ? चारक द्वारा वार्त्ता भेने किछु तारतम्यो करितहुँ । ई त हम अकस्मात् एहि पथेँ जाइत अपनहि काने सुनल, बेस ।

सूत्र– **(स्वगत)** बाह रे ! कलानिधान, की समयानुकूल पात्रक वेषै कार्य मे तत्परता देखाए रहल अछि **(प्रकाश)** प्रिये ! अहाँ अनर्थ कैल ।

नटी– **(भयभीता भै)** से की से की ?

सूत्रधार– कलियुग निशचर गुप्तरूप बिचरैत अहाँक कटु कथा सुनि क्रोधित भै गेल अछि । चलू–चलू, पड़ाउ **(कहि पड़ाएब नाट्य)** ।

नटी– **(सूत्रधारक वस्त्रक खूट पकड़ि)** अरे दैबा रे दैबा ! हमरहु त नेने चलू **(कहैत दूनूक प्रस्थान)**।

[इति प्रस्तावना]

[एक दिश सँ क्रोधान्ध कलिक प्रवेश]

कलि– कहाँ गेल, **(चारू दिशि ताकि)** के छल, की बजैत छल, ''मिथिला–देशमध्य की यापत क्रूर कलिक परभाव''? त की हम क्रूर ? हमर प्रभाव मिथिलामे नहि ? ओह अनर्थ थिक । एखन हमर आज्ञाक उल्लङ्घन करबाक सामर्थ्य देवता–पर्यन्तकाँ नहिं, तखन क्षुद्र मैथिलक मुँहेँ हमर अपमानक एहन कथा ? **(क्रोधसँ पैर पटकि)** आइ हम मिथिला कैं भस्म कै **(फेरि पैर पटकि)** आइ हम मिथिलाकैं समुद्रमग्ना करब । की हमरा चिन्हैछ नहि ? हमहि महाराज परीक्षितक गौरवहरण कै सङ्ग सङ्ग सर्वनाश कैल । हमहिं महाराज नलक पूर्ण दुर्दशा कैल । बेस, हमर प्रभुत्व देखौ, हम त हिमालयावृत बालुकाछन्न वृक्ष–वाटिकापूर्ण एहु देशकैँ जाङ्गल्ये मानैत छलहुँ, तहि से एतेक देरि ? बेस, आब स्वस्थान जैतहि एकर उद्योग करब उचित **(कहैत गमन करैत छथि)**।

[परदा उठैत अछि, स्थान कलिक राजधानी]

[कलिक प्रवेश]

कलि– (**सिंहासनारूढ़ भै**) क्यो अछि, मन्त्रीकाँ बजाबौ ।

[एक भृत्य प्रवेश कै]

भृत्य– महाराजकाँ जय । की आज्ञा ?

कला– मन्त्रीकाँ शीघ्र बजाबह ।

भृत्य– जेहन आज्ञा (**कहि गमन करैछ**) ।

[एकदिश सँ भृत्यक सङ्ग मन्त्रीक प्रवेश]

मन्त्री– निज नव नीतिहि जीति जग, नव नव रीति चलाय ।

परम प्रतापी एक जग, जय जय जय कलिराय ।।

कलि– ई ठकुर–सोहाती कथा रहै दिअ ।

मन्त्री– (**भयभीत भै**) महाराज ! विषय की थिक ?

कलि– विषय की रहत ? जखन हमरासँ ई क्षुद्रा मिथिलो नहि जितल गेलि तखन संसार जितबाक कोन कथा ।

मन्त्री– महाराज, मिथिला त जङ्गली देश थिक, एकरा हेतुक कोन श्रम ।

कलि– अरे । जङ्गलहिमे बाघ रहैत अछि से नहि बुझल अछि ? हमर प्रताप सुनि अँखिमुन्ना मुनि सब ओहीमे घोसिआएल होएत । ओकरा विध्वंसक त अवश्य यत्न करबाक थिक ।

मन्त्री– जेहन आज्ञा ।

कलि– सैन्यकाँ बजाए तकर यत्न करू ।

मन्त्री– प्रभुक ई समीचीन आज्ञा । (**कहि एक दिशि ताकि**) क्यौ अछि ?

[एक दिशसँ एक भृत्यक प्रवेश]

भृत्य– की आज्ञा ?

मन्त्री– क्रोध लोभ आलस ओ ईर्ष्या, पिशुनहुँ कैँ तहि सङ्ग ।

छल ओ अनाचार जनि सङ्गी, परम प्रवीन अनङ्ग ।।

आनह सबहि बजाए शीघ्र अति, सब आबथु एहि बेरि ।

जाथु सबहु मिलि सावधान भै, जनु आनथु किछु देरि ।।

भृत्य– जे आज्ञा (**कहि जाइछ**) ।

[एक दिशसौं उन्मत्त वेषैं क्रोधक प्रवेश]

क्रोध– (**स्वगत**) वाह, ई कोन वात ? एतेक रातिमे मन्त्री बजौलन्हि । अपने त वसैल वैसल वात वनबैत रहैत छथि, हमरा राति कै घिसिऔड़ ? हमरा चिन्है नहि छथि ? योगिअहिसँ धुरिखंडि ? हम दुर्वासाक प्रेमपात्र । तखन जहिखन तहिखन बजा ला, पकड़ि ला, एहने एहने हुकमति ? हम फेरि वैह थिकहुँ ।

कलहमूल त्रिभुवनमे हमही के नहि जानै मोहि ।

सुर नर मुनि थरथर कापथि, रुद्रमूर्ति मम जोहि ।।

वेस, आँहो आइए बुझताह । महाराजक सांझहि जे होएबाक होएतन्हि से भै जैतन्हि (**कहैत कलिक समीप जाइत छथि**) ।

कलि– आवह आवह, एखन तोहरा त कष्ट अधिक भेल होएतहु, परन्तु हमरहु तेहने आवश्यक भेल जे बजौलहुँ ।

क्रोध– (**आँखि चढ़ाए**) से की ?

कलि– संसारमे हम अपन पूर्ण प्रताप नहि देखल तैं तोहरा बजाओल । एकर यत्न करबाक थिक ।

क्रोध– से की भेल अछि ? वा हमरा रहितहि से किऐक होएत–

सहजहि साधिअ प्रभु अनुशासन, जग निज यश प्रकटाबी ।

त्रिभुवन प्रभुपदप्रेम बढ़ावो, तौं हम क्रोध कहाबी ।।

कलि– बाह, बाह, किऐक नहि, भला ! तौं कहिऔ मिथिला गेल छह ?

क्रोध– हँ हँ, गेल छी । राजा जनकहिक ओहि ठाम सीता–विवाहक धनुष भङ्ग समयमे परशुराम सङ्ग । परन्तु थोड़बे काल रहलहुँ ।

कलि– आब फेरि जाय अपन प्रभाव देखाबह ।

क्रोध– हमर प्रभाव जान तिहु पुर सब, तहँ की मिथिलादेश ।

तैओ शिरोधार्य हमरा थिक जे किछु प्रभुक निदेश ।।

(**कहि जाइत छथि**)

[एक दिशसँ लोभक प्रवेश]

लोभ– **(स्वगत)** आइ महाराज हमरा किएक बजौलन्हि ? की किछु देताह ? ओ नहिओ देताह तैओ किछु लेबे करबैन्हि **(कहि कलिक समीप जाए)**

आज्ञाकारी जगत जे, तकरा धन जन राज ।
दायक सहजहि सतत प्रभु, जय जय जय कलिराज ।।

कलि– लोभ, आबह, आबह । तोहरासन तोँही छह ।

लोभ– हम भूतल घटघटमे वासी, ब्रह्म रूप कै मानू ।
निज निज रूचि रूपहिं सब मानथि सत्य कथा ई जानू ।।
महाराज ! किएक बजाओल गेल से त कहल जाओ ।

कलि– एक बेरि मिथिला जाए अपन कर्त्तव्य देखाबह ।

लोभ– महाराज, हमरा त यैह चाही ।
परधन परतिय प्रेम बढ़ाबी, बिसराबी निज धर्म ।
साधिअ काज प्रभुक हम सहजहि, नहि बूझथि मम मर्म ।।

कलि– से अवश्य । एहि बेरि कार्य साधनोत्तर तोहरा पूर्ण पारितोषिक देबहु ।

लोभ– एखन यात्राक काल खालिए खाली ?
घरहिक बनल बनै अछि बाहर ई जग के नहि जानै ।
यात्रासमय नृपति बीड़ा दै, तैँ अनुचर सनमानै ।।
हम तौँ दूर देश जाइत छी, बट–खरचा किछु चाही ।
ततबौ सम्प्रति होए कृपा जे भोजन अपन निबाही ।।

कलि– **(मन्त्रीसँ)** मन्त्री, हिनका किछु खरचा देआए दिऔन्हि ।

मन्त्री–जेहन आज्ञा । **(पत्र लिखि हाथमे दै)** जाउ, कोषाध्यक्षसँ लै लेब ।

लोभ– **(पत्र लेने चलैत स्वगत)** जे चाहल से भेबे कयल । तखन चलबैक चाही **(कहि जाइछ)** ।

[एक दिशसँ पिशुनक प्रवेश ।]

पिशुन– (स्वगत) महाराज हमरा सभामध्य किऐक बजौलन्हि ? हम त सभा मध्य किछु नहि कहबैन्हि । तखन आज्ञापालनक हेतु जाएब उचित । वा सभास्थ व्यक्तिक सङ्गसँ जँ एकान्तमे निवेदन करबाक सामग्रिए प्राप्त भ' जाए तँ काजे भेल । **(कहैत कलिक समीप जाए)**

सुनि श्रुति गुप्त कथा दृढ़ बुझि करु, तहि अनुसारहि काज ।
सैह सुनक पुनि पुनि अभिलाषा, जय जय जय कलिराज ।।

कलि– आउ आउ ! अहाँकेँ हम एही हेतु महामहोपाध्याय–पद प्रदान कयने छी । अहाँक बेत्रेक हमर कोनो कार्यक साधन नहि भै सकैछ ।

पिशुन– महाराज ! हमरा सभामध्य किऐक बजाओल गेल ? ज्ञा हम रही ता केओ आबथि नहि से आज्ञा दै देल जाइक ।

कलि– हम सैह आज्ञा देने छिऐक ।

पिशुन– बेस, हमरा किऐक बजाओल ?

कलि– एक बेरि मिथिला जैतहुँ । ओतै हमर कोनो प्रताप नहि अछि । अपन क्रियाकौशल देखाए हमर कार्य–साधन करितहुँ ।

पिशुन– बेस ।

मूल कलह क्रोधक एके हम जगभरि के नहि जान ।
गुप्त कथा एकान्तहि सुनि सुनि सहजहि विग्रह ठान ।।

कलि– एक बेरि मिथिलाकेँ तँ देखू ।

पिशुन– (हँसिकेँ)

की हम देखब देश से, से देखत गुण मोर ।
धन जन मान सुकीर्त्ति यश, करब सबहि हम ओर ।।
कान फोड़ि हार फोड़िकेँ, फोड़ब देशक पेट ।
प्रभु अनुशासन सहजमे, साधब एक चपेट ।।

कलि– अवश्य अवश्य ! अहाँसँ की नहि हो । **बेस शीघ्र जाउ ।**

पिशुन– जेहन आज्ञा **(कहि गमन करैत छथि)**

[ओही पथेँ ईर्ष्याक प्रवेश]

पिशुन– (ईर्ष्यासँ) अहाँ आब जाइत छी ?

ईर्ष्या– **(आँखि चढ़ाए)** से किऐक ?

पिशुन– हम महाराजक भेट कैँ फिरबो कयलहुँ । बेस, आबहु जाउ ।

[कहि हँसैत जाइत छथि]

ईर्ष्या– **(स्वगत)** ई की महाराजसँ भेट कैँ फिरलाह तँ बड़ गोट भेलाह ? आइ हुनका की लड्डू भेंटलैन्हि ? भेटलैन्हि तँ खाथु, तेँ हँसी कथिक ? हम की बताहि बकलेलि ? तखन ऐंठैत छथि कथी लै ? हमरा कनफुसकी तनें अबैए । बेस, हमरहिसँ लगलाह अछि तँ बुझताह । महाराज कतै छथि ? एखनहि तँ सब कथा कहबैन्हि, हमरा ई सब नहि नीक लगैत अछि ।

दरबान– अरे ! सामने महाराज बनल बाड़न, जाइतिउ ना ।

ईर्ष्या– से हमरहु सुझैत अछि । हमहुँ महाराजकै सुझैत छिऐन्हि । अहाँ किऐक टेंटिया–सूगा जकाँ टेँटेँ करैत छी ? **(कहि कलिक समीप ज़ाइछ)** ।

कलि– आउ, आउ ।

ईर्ष्या– आइ हम कथी लै आउ । पिशुनक पालन कैल जाइन्हि जे सरकारक कनलगुआ छथि, हम तँ स्त्रीजाति, सब खन अपमाने सही ।

कलि– नहि नहि, कदापि नहि । हम तँ अहाँकेँ बजौनहि छलहुँ, बीचहिमे ओ आबि मोसहि जकाँ कान लग भनभन कै अकच्छ कैलक तेँ ओकरा परतारि बैसाओल ।

ईर्ष्या– आब थोड़ेक दिन हमरो काज वैह करथु ।

कलि– **(हँसिकेँ)** से कतहु हो, हमरा राज्यस्थापनक मुख्य यशक भागी समस्त सेवकवर्गमध्य केवल अहीं छी । भला, कुरु ओ पाण्डवक हृदयमे अहाँक प्रभाव नहि पड़ैत तँ कदापिअहु हमरा ई राज्यक सौभाग्य प्राप्त होइत ?

ईर्ष्या– जखन हम सं काज सब कयल से कयल। आब के पुछेवाला आब हमर कोन काज। आब त कतेक गोटे आगाँ पाछाँ दौड़ल करताह।

कलि– (**स्वगत**) से तँ हमर स्वाभाविके विषय थिक। नहि त अकृतघ्नता ने भै जाएत। (**प्रकाश**) छि: ! ई कृतघ्नक काज थिक। हम भला, अहाँक गुण कहिओ बिसरब ? अहाँक बिना हमर कोनो कार्यक साधन नहि भै सकैछ।

ईर्ष्या– भला, हम कथी लै बजाउलि गेलहुँ, सेहो त कहू।

कलि– मिथिलामध्य हमर प्रभुत्व कोना होयत ?

ईर्ष्या– भला, एखन अहाँक प्रभुत्व कतै नहि ?

कलि– केवल मिथिलामे नहि। से काज अहाँक बेत्रेक सम्पन्नो नहि होएत।

ईर्ष्या– कतेक गोटे फाँड़ बान्हि मनुसौठ देखैब लै गेबे कैलाह अछि।

कलि– गेलाह तँ की ? काज अहीं साधब।

ईर्ष्या– नहि नहि, हुनका सबहिक सोझाँ हम के ? परन्तु हुनकहु सबहिक मनुसौठ एही बेरि देखब।

कलि– अरे ! कतै अहाँ, कतै ओ सब ?

अबला प्रबला विदित जगत ई के नहि जानै।
तैं त्रिभुवन सब वश्य तनिक ई निश्चय मानै॥
अमिअ विभागक बेरि, विष्णु भै तिय–तनुग्राही।
साधल सुरगन–काज, जगत जानै सब ताही॥
एही सौं बुझबाक थिक, त्रिभुवन तीय–प्रभाव जे।
ताहू मध्य विशेष कै, अहँक सदृश तिहु लोक के॥

ईर्ष्या– बेस, ओहो लोकनि गेलाह अछि, तैओ हम जैबे। हुनका सबहिक मनुसौठो देखब।

कलिक आज्ञा मानि कै हम आइ मिथिला जाइछी।
केहन अछि ओ देश एके बेरि देखै जाइछी॥

एकता बहु कालसौं डेरा जमा कै बैसला ।
आब एकं छनहिमे हम घर उजाड़ै जाइछी ।
ओतै क्रोधक लोभ मोहक शक्ति किछु चलतैन्हि की ।
ताहि सबहिंक योग्यता देखौ जाइछी ।।
हम करनी एहि बेरुक हैत जे से की कहू ।
देश मिथिला जीति कन्हिुक सैन्य जीतै जाइछी ।।

(गबैत गमन)

कलि– अरे, आलस्य नहि एलाह ? क्यों हुनका शीघ्र आनौ ।

[एकदिशि आलस्य दृष्ट होइछ]

आलस्य– हमरा त भने बैसले खरचा भेटैए । दरबार जैबाक कोन काज । आइ कथी लै बजौलन्हि ? जे कहबाक छलन्हि से समादे कहा पठबितथि । हमरा त जनितहि छथि ।

घर बैसल खरचा नित पाबी, कतहु जाइ नहि आबी ।
अनके आस सतत मन राखी, पड़ले काल बिताबी ।।

ओह ! एहन नौकरीक कोन काज ? के दरबार जाए आबै ?

अरजी पठाए दैत छिऐन्हि जे दुःखित छी । पुनि घरहिमे खाटपर पड़ल रहब । **(किछु सोचि)** के लिखै पढ़ै । जाइत छी सूति रहै । जँ बिसरिए जाथि तँ जान बाँचले, नहि त फेरि बजाबै आओत तँ जैबे ।

[एक दिशसँ एक सिपाही आबि]

सिपाही– रौरे के खातिर मालिक कबके बैठल बाड़न । जलदी से चलै के चाही ना ।

आलस्य– अहाँ वृत्ते छलहुँ ? बेस, चलू चलू, हम अबैत छी ।

सिपाही– न न, हमरा के जलदी से साथे लाबे के हुकुम बाड़े ।

आलस्य– बेस, चलू **(कहि मन्दगमनसँ कलिक समीप जाय)** सर्वदिग्व्याप्त जनिक यशोगान एहन कलि महाराजक जय होऔ ।

कलि–आउ आउ आलस्य ! अहाँकाँ श्रम भेल ।

आलस्य– महाराज, जाहि काज लै बजाओल गेल से समादे कहा पठाओल जाइत तँ नीक छल ।

कलि– कहल तँ नीक परन्तु काजे विशेष छल ।

आलस्य– बेस, की आज्ञा होइछ ?

कलि– अहाँ के आइ मिथिला जैबाक होएत ।

आलस्य– बाप रे बाप ! मिथला ! एतेक दूर, कोना जाएब ? हमर सक नहि होएत ।

गेहहि रहब सहब बरु दुःख । वसन विहीन मरब बरु भूख ।
भवनान्तर गमनहु दुखभार । पड़लहिमे अछि सब सुखसार ।।

कलि– अरे ! एक बेरि जाउ त । ओतै बड़ आनन्दसँ रहब आ हमर काजो होएत ।

आलस्य– नहि मानब तँ जैबे ।

कलि– शीघ्रे जाउ ।

आलस्य– हमर शीघ्र तँ बुझले अछि ।

थिकहुँ आलस के न जानै हमर शील स्वभाव ।
प्रभुक आज्ञहु चालि अप्पन छोड़बे हम आब ।।
जाय पहुँचब जखन मिथिला, कठिन ऐबो हैत ।
कोटि कष्टहु बिदा करइत कतेक दिन विति जैत ।

(गबैत जाइछ)

कलि– (**मन्त्रीसँ**) मन्त्री, आब जे क्यो छथि हुनका लोकनिकेँ अहाँ अपनहि बुझाए बिदा करबन्हि ओ सबहुकाँ सावधान कै देबन्हि जे गुप्त रीतिअहि कार्यसाधन करथि, हम आन आन तरहक प्रत्यत्न करै जाइत छी ।

मन्त्री– जेहन आज्ञा ।

[कलि एक दिशसँ जाइत छथि]

[नेपथ्यमे]

प्रजा पुत्रसम मानि, भूप पद जनकक पाबथि ।

नीति सुपथ परचार, भ्रमहु भ्रम मन नहि लाबथि ।।
द्विजगण रत सद्वृत्ति, सतत उपदेश सुनाबथि ।
जैँ सब वर्ण सुकर्म, निरत रहबे चित लाबथि ।।
कलिकालहु नहि देखि पड़, लम्पट तस्कर पिशुन खल ।
पाबि पङ्गुता धर्महुक, मिथिलहिमे विश्राम थल ।।

मन्त्री– (सुनि) अरे ! ई के थिक जे मिथिलहिक गुणगान करैत फिरैए ? तखन तँ हम आब सबकाँ गुप्त मन्त्रणा मण्डपहि–मध्य लै जाइ से नीक **(कहि जाइत छथि)।**

[एक दिशसँ दुइ मैथिलक प्रवेश]

प्रथम– 'प्रजापुत्र'....(इत्यादि पढ़ैत छथि ।)

द्वितीय– औ सङ्गी ! माइक सेवासँ की नहि भै सकैत अछि ? हमरा सबहि जेँ ताहिमे नितान्त अनुरक्त रहैत आएल छी तैँ देखैत छी ।

कमला कमलै नाम धराय । श्रीवाणी वाग्वती कहाय ।
भू सौँ आदिशक्ति अवतार । सहजहि पूरथि सब सुखसार ।।

प्रथम– से तँ अवश्य । चलू माक दर्शनासँ जन्म कृतार्थ करू **(कहि दूनू जाइत छथि)।**

[परदा उठैत अछि, दासी सहित मिथिला देखना जाइत छथि]

[दूनू मैथिल प्रवेश कै]

प्रथम मैथिल– श्रीमातुश्चरणाम्भोजं शिरसा प्रणमाम्यहम् ।

दोसर मैथिल– नखेन्दोर्मस्तके योगात् शिवरूपो भवाम्यहम् ।।

मिथिला– आदिशक्ति श्री जानकी अपन स्नेहसँ अहाँ सबहिकाँ सर्वदा कल्याण करथु ! आउ आउ, अहाँसबहिक विद्या–विवेकादिसँ केवल हम प्रसन्ने नहि छी, काशिकादि सिहैतहु छथि ।

प्रथम मै०– अम्ब; ई हमरासबहिक भाग्योदयक लक्षण, परन्तु ई अवश्य जे

स्वभावगुणनम्रता विविधबुद्धिगम्भीरता,
स्वधर्मपरिनिष्ठता सकलशास्त्रपारङ्गता ।
सुनीतिपथचारिता गुरुनिदेशसम्पालिता,
सदा शुभचरित्रता जननि मोदसंवर्धिता ।।

मिथिला– उचिते कथा । ई स्वाभात्र अहाँसबहिक दिनानुदिन बढ़ौ ।

दोसर मै०– हे मातः, अहाँक आशीर्वादक फल अवश्य होएत, किऐक तँ–

आशाबीजं हृदि क्षेत्रे यत्नेन परिरोपितम् ।
फलदं भवता सिक्तं भातुराशीर्वचोऽम्भसा ।।

मिथिला– अहाँ सबहिक सन पुत्र भेने हमरहु गौरव अछि ।

प्रथम मै०– अहाँक गुणगौरवध्वनि तँ श्रीसीताक जन्महि आकल्पान्त तीनू लोकमध्य गुञ्जायमान होइत रहत ।

मिथिला– से तँ अवश्य परन्तु स्त्रीकाँ मुख्य यश पुत्रवती कहौलासँ, ताहूमे जँ सुपुत्र होइक । हमरा से सब मनोरथ अहाँसबहिसँ पूरल अछि; परन्तु (**कहि चुप्प**) ।

दोसर मै०– मा ! परन्तु कहि चुप्प भेलासँ चित्तमे किछु चिन्ताक आभा बोध होइछ ।

मिथिला– आओर त किछु नहि, ई भारतक गौरवनाशकारी कुरु–पाण्डवक लड़ाइमे भारतवीरक संहारसँ धर्मादिक रक्षाक चिन्ता सतत मनमे होइतहि रहैत अछि ।

ओ धर्मधीर बलवीर कलाप्रवीन,
भै गेल हा जगत से जनसौँ विहीन ।
तैँ चित्त चैन नहि होइछ राति दीन,
तैओ अहाँसबहि छी सबमे धुरीन ।।

प्रथम मै०– से अवश्य, परन्तु ओहि महायुद्धक मुख्य कारण ई भेलैक

ईर्ष्या कटाक्ष सर सोँ उर भिद्यमान,
निक्षिप्त क्रोधकण दृक् अरुणायमान ।
लोभाब्धि वीचि चितमध्य चलायमान,
हा! ई जतै कहु कतै थिर धर्म ज्ञान ।।

हमरासबहि त

याज्ञवल्क्य गौतम बनाओल मार्ग नीक,

ताही पथैं सबहुकाँ चलबाक थीक ।

ई मानि कर्म करयष्टि मुदाऽवलम्ब,

सन्तोष सम्बर सदा हृदि ध्यान अम्ब ।।

मिथिला– अवश्य अवश्य । हमरा ई विश्वास अछि जे अहाँ सबहि एहि प्रतिष्ठाक रक्षा अवश्य करब । अग्रिमक हेतु श्रीजगदम्बा जनकात्मजा कै भारा छन्हि, किऐक तँ हुनका नैहरक सम्बन्धैँ एहि देश पर विशेष ममत्व अवश्य होएतन्हि । परन्तु कलिकालक महिमा दिन दिन बढ़ले जाइछ तकरे भय होइछ ।

दोसर मै०– अम्ब जाहि ठाम स्वयं श्रीजगज्जननी आदि शक्ति जानकी आविर्भूता भेलिहि ताहि ठाम कलियुगक एतबा दिन की चललन्हि जे आब चलतन्हि ।

[एक दिशसँ एक दासीक प्रवेश ।]

दासी– काशिकाक पठाउलि एक अन्तरङ्गिणी सखी कोनो गुप्त कथा कहै आइलि छथि, से वार्त्ता देबै ऐलहुँ अछि ।

मिथिला– बेस, (मैथिलक प्रति) आब हम एखन जाइत छी, अहाँ सबहि अपन कर्त्तव्यपालनमे मन देने रहब **(कहि सखीक सङ्ग जाइत छथि)** ।

प्रथम मै०– औ सङ्गी, माक कथाक भाव बुझल कि नहि ?

दोसर मै०– चलू चलू, अहाँ सब ठाम अनुमानखण्डहिक निवेश–प्रवेश करैत रहैत छी । जाधरि हमरासबहि अपन सुमार्गे चलैत रहब ता सहस्रो कलियुगक कोन भय । चलू चलू, सन्ध्यासमय बितल जाइछ **(कहि दूनूक गमननाट्य)** ।

[यवनिकापतन ।]



दोसर अङ्क

[स्थान पथ, एक बङ्गाली पथिकक प्रवेश]

बङ्गाली– आहा ! बिलक्खन देश ! कि रम्य पल्लीग्राम ! ग्रामे ग्रामे कत कत देबायतन। देखिते कि भक्तिभाव बोध होच्छे। बङ्ग देशे केवल शारदी ओ सरस्वती पूजार समय ग्रामे ग्रामे ये रूप हुलस्थूल वाद्यादि शब्द सुना याय, मिथिलाय प्रतिदिन सेई रूप हुलस्थूल देखितेछी। मैथिलगन केमन कर्मकाण्डी। देखुन, पञ्चदेवोपासनाय एके बारे मग्न आछेन। वास्तविक ई मिथिला कि रूप पवित्र भूमि ताहा आमि वर्णन करिते पारितेछि ना। अन्य देशेर तीर्थ नदीप्रवाहे अथवा नदी सङ्गमे वा देवादि अवतार ग्रहने पूजित हइया थाकेन परन्तु, परन्तु एइटा केवल मिथिला देशेरइ पवित्रतार महिमा ये भूमि हइते समस्त भूतापनाशिनी आदिशक्ति श्रीसीतानामे आविर्भूता हइयाछिलेन। वास्तविक विदेह राजदेशेर प्रशंसा सुरगनओ करिते पारेन ना, आमार मत सामान्य मानुषेर गणना की। मा सीते, आमि निजेके धन्य गणना करि ये परम पवित्र आपनार जन्मभूमिर दर्शन करिया कृतार्थ हइलाम। मा, तोमाक तथा तोमार जन्मभूमिके आमार कोटि कोटि नमस्कार।

(एक दिशसँ दूइ कुम्हारक प्रवेश)

पहिल कुम्हार– एहि वसन्ती बसातमे आमक मँजरक महँक केहेन !

दोसर कुम्हार– रौ ! बाबूक ओंहिठाम मन्दिरमे एखन सब दिन नाच होइत छैक ! तोँ नाच देखै जाइछेँ ?

प० कु०– हँ हौ ! हम गीत सीखै लै सब दिन जाइत छी कि ?

दो० कु०– सिखबो कयलेहें ?

प० कु०– हँ, हौ ! कयक गोट सीखि लेलिऐन्हि कि।

दो० कु०– एकोटा गैबो तँ कर जे बुझिऔक ।

प० कु०– बंस, सुनह ।

(दुनू कुम्हार बासनक भार राखि बैसैए)

(प्रथम गवैये)–

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन,
सापराधतया मयापि न वारिताऽतिभयेन ।
हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव ।।
किं करिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण ।
किं धनेन जनेन किं मम किं सुखेन गृहेण ।।
चिन्तयामि तदाननं कुटिलभ्रु कोपभरेण ।
शोणपद्ममिवोपरि भ्रमताकुलं भ्रमरेण ।।
तामहं हृदि सङ्गतामनिशं भृशं रमयामि ।
किं वनेऽनुसरामि तामिह किं वृथा विलपामि ।।
तन्वि खिन्नमसूयया हृदयं तवाकल यामि ।
तन्न बोद्भि कुतो गताऽसि नतेन तेऽनुनयामि ।।
दृश्यसे पुरतो गतागतमेव किं विदधासि ।
किं पुरेव ससंभ्रमं परिरभणं न ददासि ।।
क्षम्यतामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि ।
देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि ।।
घृर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रवणेन ।
केन्दुविल्वसमुद्रसम्भवरोहिणीरमणेन ।।

बङ्गाली– (**अकचकाइत स्वगत**) कि आश्चर्य बाबा । देखि ये भाण्डेर भारवाहीओ जयदेव–भनित गीतगोविन्द कि शुद्धपूर्वक गाइतेछे । एइ व्यक्ति के सेटा जिज्ञासा करा उचित । (**प्रकाश**) तुमि के ?

प० कु०– की कहल ? हम नहि बुझल ।

बङ्गाली– (**स्वगत**) बोध होच्छे बङ्गभाषा बुझिते पारे ना । ताहले देशी भाषा बोला उचित । आप को होता है ?

प० कु०– हम को होता है, आदमी होता है ।

बङ्गाली– ता तो ठीक, आदमी सब होता है । हम जात का बात पुछता है कि तुम कौन जात होता है ?

प० कु०– ब्रह्मा रचना करइत जानू, विष्णु चक्रकरधारीसौं ।
बाबू सब पण्डित कहि बजबथि, छुट्टी कतै बेगारीसौं ।।

(बङ्गाली चुपचाप सुनैत छथि)

दो० कु०– बाबू ! बुझलैक एकर पिहानी ?

बङ्गाली– बाबा ! हम को तुम अपना बातमे मत बोलो, हम को बातमे बोलो (**सूनि, दुनू कुम्हार हँसैत अछि**) ।

प० कु०– मुड़कट्टा मुड़जोड़ा रजपूत, आब बुझल ?

बङ्गाली– आप राजपूत होता है ?

दो० कु०– नहि नहि, कुम्हार होता है, जो बासन बनाता है ।

बङ्गाली– आपलोग कुमार कि कुम्भकार होता है ? जो हाँड़ी साजता है ।

प० कु०– हँ हँ,

नैयायिक हमरे धन लै लै, सभा जीति घर आबथि ।
जनिका ई धन सञ्चय नहि से, बीच सभा पछताबथि ।।

बङ्गाली– आपका नाम क्या बोलता है ।

प० कु०– हमको रामूपण्डित लोक कहता है ।

बङ्गाली– (**आश्चर्यितसन चुप्प भै दोसराकाँ**) आप को महाशय ?

प० कु०– हमरो को सोनूपण्डित कहता है ।

बङ्गाली– आप सब कुम्भकार कि पण्डित महाशय ?

प० कु०– हम सब कोइ पण्डिते हैं, **(कहि हँसैत अछि)** ।

बङ्गाली– (आश्यर्चसँ स्वगत) 'धन्याऽस्ति मिथिला यत्र कुम्भकारोऽपि पण्डित:' । इहार काछे पण्डित महाशयेर बाड़ी जिज्ञासा करिते लज्जा बोध होच्छे, परन्तु जे देशे कुम्भकार एमन पण्डित से देशे ब्राह्मणमात्रई अवश्य शास्त्रपारङ्गत हइबेन । केवल ब्राह्मणेर बाड़ी जिज्ञासा करा उचित **(प्रकाश)** ब्राह्मण महाशय का बासा कितना दूर है ?

प० कु०– (हाथसँ देखाए) यह लगही मे देखता है ?

[बङ्गाली ओही दिशि जाइत छथि, दोसर दिशि कुम्हार दुनू जाइछ]

दो० कु०– रौ रमुआ ! तोँ एहि बटोही कै तँ खूब उल्लू बनौलेँ, ई फकड़ा सब तोँ कतै सिखलेँ ?

रामू– हौ भैया ! बबुआजी बढ़ै छलथिन्हि, हम हुनक गाय चरबै छलिऐन्हि, ओही सङ्गे कतेक ने सिखल, आब तँ सबटा मनो ने अछि ।

सोनू– तोँ की कहलहिक से हम नहि बुझलियौक ।

रामू– दुर मरदे, चाकपर घैलक मूँड़ी बनाक कटै छहक ?

सोनू– हँ, से तँ करै छिऐक ।

रामू– फेरि घैला बना कै जोड़ै छहक कि ने, तकरहि कहैछै मुड़कट्टा मुड़जोड़ा रजपूत ।

सोनू– फकड़ा की कहलहिक ?

रामू– चलह, से सब गाम पर कहबहु **(कहैत दुनू जाइत अछि)** ।

[एकदिशसँ एक पण्डितक प्रवेश ।]

पण्डित– (स्वगत) सुनते रहे कि मिथिलामे संस्कृतविद्या की बड़ी चर्चा है, इससे काशीमे रहते हुए भी मिथिलाके पण्डितोँ की बुद्धिमत्ता देखने की बड़ी उत्कण्ठा हुई, क्योंकि वहाँ तो विद्याधुरीण सकलशास्त्रपारङ्गत अनेकानेक विद्वन्मण्डलीमे बैठ कर शास्त्रके विचारमे सब की विद्या और विचार मैं सोच चुका है । मेरे कतिपय प्रश्नों का समीचीन उत्तर उन सबों से भी नहीं हुआ,

इसलिये पूर्वसमय के विद्याकेन्द्र मिथिला के पण्डितों से मिलने के लिये यहाँ आया हूँ । भला, जिन प्रश्नों का उत्तर होना असम्भव विचार रखा है , देखें, उनका निर्णय यहाँके पण्डित सब किस रीतिसे करते हैं (**कहैत बङ्गालीकैँ देखि**) आप कौन हैं ? भला, यह तो बतलाइए कि यह कौन ग्राम है ।

बङ्गाली– महाशय ! आमि जानि ना ।

पण्डित– अरे ! यह तो बङ्गाली मालूम होता है । (**प्रकाश**) आप किस देश के वासी हैं, यहाँ क्यों आए हैं ?

बङ्गाली– हम बङ्गदेशमें रहता है, विद्या पढ़ने चाहता है, उसका दरकार से यहाँ आया है ।

पण्डित– (**स्वगत**) यह टूटी भी हिन्दीमें कहा सो भला किया नहीं तो 'जाची आची' हम कुछ नहीं समझते । (**प्रकाश**) क्या पढ़ने चाहते हो जो इतना दूर देश आए हो, आपके देश में कोई पण्डित नहीं हैं क्या ?

बङ्गाली– पण्डित का बात नहीं है, हमारा देशमें भट्टाचार्य महाशयगन है । हम मिथिला का बड़ा नाम सुना है, उसका बात पर यहाँ आया है ।

पण्डित– आप मिथिला का क्या नाम सुना ?

बङ्गाली– मिथिला न्यायशास्त्र का जन्मभूमि है तो । न्यायशास्त्र का आदि ग्रन्थकर्त्ता पुण्यनामा गौतम मिथिलामे अवतार ग्रहण किया तो ।

पण्डित– वह समय अब नहीं है, न विदेह राजा हैं, न जनकपुर राजधानी है ।

बङ्गाली– ना महाशय ! मिथिलामें शास्त्रचर्चा प्रचुरप्रमाण का सुना है । आप क्या यह नहीं सुना है–'धन्याऽस्ति मिथिला यत्र कुम्भकारोऽपि पण्डितः ।'

पण्डित– (**हँसि कै**) तुम तो यहाँ शिष्य होने आए हो, हम तो परीक्षक होकर उतरे हैं।

बङ्गाली– यह आप भूल करता है महाशय ! अब भी मिथिला विद्या का कोष है बाबा ।

पण्डित– हँ हँ, जाओ, जाओ, तुम बङ्गाली आदमी हो । तुमको कङ्कड़ ही पहाड़ मालूम होता है । अब मिथिलामे वह विद्याप्रचार नहीं है ।

बङ्गाली– (**स्वगत**) भालो भालो, आमि जाच्चि, आपनि यदि कुम्भकारेर पाण्डित्य देखितेन तबे बुझिते पारितेन ये अद्यावधिओ मिथिलाय केमन शास्त्रचर्चा हइया थाके, ताई जगज्जनी जानकी एमन गर्व अवश्य ई चूर्ण करिबेन (**कहैत गमननाट्य**) ।

[एक दिशसँ एक धूर्त्तक प्रवेश ।]

धूर्त्त– (**बङ्गालीसँ**) क्या आपही कहते रहे कि मिथिलामे विद्याप्रचार नहीं है ?

बङ्गाली– (**त्रस्त भै**) ना महाशय ! एकठो दूसरा देश का पण्डित कहता है (**आङ्गुरसँ देखाय**) वही आता है (**कहि जाइत छथि**) ।

पण्डित– (**स्वगत**) अच्छा, अब थोड़ा दिन बाकी है । आज इसी बस्तीमे ठहरें, तबतक भाँगबूटी का ठेकाना लगावें, (**कहि बैसैत छथि**) ।

[एक दिशसँ दोसर धूर्त्तक प्रवेश ।]

पहिल धू०– हो सङ्गिता ! ई लठिआहा कोन देशक थिक, से नहि कहि । मिथिलाक निन्दा करैत छल अछि ?

दो० धू०– की करबहक, कतेक बतहा राजो महाराजकैँ कुवाच्य कहैत छन्हि, तैँ की हुनक महत्त्व घटैत छन्हि ।

प० धू०– सेटा हम नहि मानब । एकरा एना कतहु जाय दिऐक ।

दो० धू०– अरे ! परदेशी बेचाराकैँ चौपाड़ि पर जाए दहक । जखन पढ़ुआ बाबू एक फाँकी पुछथिन्हि की चुप्पे भै जैताह । एहू बुढ़ापामे बेपोथी पसारने रहथि तँ फेरि हमरा कहिहह ।

प० धू०– हो बाबू ! सेटा होबै नहि देबैन्हि जे ई चौपाड़िधरि जाथि ।

दो० धू०– तँ तों की करबहक ?

प० धू०– जँ तों सङ्ग दैह त हिनका बाटहिसँ नङड़ाबी ।

दो० धू०– हमर कोन काज ?

प० धू०– दूनू गोटे हिनका सङ्ग तेहन प्रपञ्च करी जे हिनक विद्याबलो बुझी ओ ततेक भय होइन्हि जे पड़ाइए जाथि ।

दो० धू०– साँझकै बेचाराकें जनु बैलावह ।

प० धू०– तोँ की बुझबहक । ई हमरे कथा नीक होइछ । तोँ की मिथिलाक निन्दा अपना कानैं सुनलह अछि ? जँ सुनितह तँ तोहरहु एहने विचार होइतहु। तकर जीवनकैं धिक्कार जे जननी ओ जन्मभूमिक निन्दा सूनि बे प्रतिकारैं जीवितहि रहै । सुनल नहि छहु–'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।'

दो० धू०– (**हँसिकै**) से सब सुनल अछि । तोँ कतेक बतहाकेँ नङड़ौने फिरबह ।

प० धू०– बाह, ई कोन कथा,

जे निज देशक उन्नतिप्रिय, से उत्तम पुरुष कहाबथि ।
तनु त्यागहुँ महिमडण्लमे से, अतिशय आदर पाबथि ।।
मध्यम जे जन निजकुलपोषक, अधम ताहि कवि गाबथि ।
जे निज देश कुलक निन्दा सुनि, चुप्पहि काल बिताबथि ।।

दो० धू०– के तोहरासँ शास्त्रार्थ करौ । बेस, कोन प्रपञ्च करबह से त कहह ।

प० धू०– (दोसर धूर्त्तक कानमे किछु कहैत छथि) । (प्रकाश) की ई नहि भै सकैत अछि ?

दो० धू०– बेस, तखन चलह (कहि दूनू जाइत छथि) ।

पण्डित– अरे ! इसी मिथिला के वर्णन सुनते थे ? यह वही मिथिला है ?

एई मिथिला जनक जासु नृप ह्वै यश पायो,
एई मिथिला भूमिगर्भने सिय प्रगटायो ।
याज्ञवल्क्य ऋषिराज गौतमादिक मुनि केते,
एई मिथिला धाम प्रगट को गनिहैं तेते ।।
एई मिथिला की कथा देश देश व्यापित अहै,
सब समृद्धि सम्पन्न भल अतिप्रसन्न गुणिजन कहै ।।
वाचस्पति अरु वर्द्धमान शङ्कर चण्डेश्वर
पछधर केशव शूलपाणि गङ्गेश विशेश्वर ।।

कर्मकाण्ड तनुधारि मिश्र मण्डन जग जाये,
विद्या विद्यानाम प्रगट गहिणी सो पाये ।
ऐसो अनगन विबुधजन सुनियत मिथिला ह्वै गये,
जासु बुद्धिगुण चातुरी यश भूतल चहु निश छये ।।

यद्यपि यह सब कुछ जानते हैं परन्तु काशी के पक्षपात तो चित्त से छूटता ही नहीं ।

जहँ सुरसरि के धवल धार शोभा सरसावत ।
परसत मज्जन पान करत सब जी सुख पावत ।।
विश्वनाथ निजनाम कामदायक जहँ रजैं ।
जासु दरस त्रय ताप दाप तुरतहि दुर भाजैं ।।
अन्नपूर्णा पालन करत ढुंढिराज लालनहि रत ।
भैरव रक्षक ह्वै रहैं कहु काशीसम अपर कत ।।

[एक दिशसँ एक लकड़िहारा जारनक बोझ लेने गान करैत प्रवेश करैत अछि ।]

अलिकफलकविरचिततिलकेन,
स्फुटति न सा विकसिततिलकेन ।।
हरिणा रमिता रमणेन या ।
क्षणरुचिचतुरिमजनकपटेन, श्वसिति न सा परिजनकपटेन ।
रतिरसपरवश–जलजघनेन, तपति न सा हिमजल–घनेन ।।
कुचतटघटितकरज–निकरेण, ज्वलति न सा निशि रजनिकरेण ।
परिमलपरिगतमधुपवनेन, स्फुटति न सा मृदुमधुपवनेन ।।
मुरलिवलितसुस्मितवदनेन, भवति न सा विस्मितवदयेन ।
कुवलयमरकतमलयवलेन, दलति न सा कुवलयवलयेन ।।
रघुनृपसुतकृतगुणरचनेन, हरिरुदयतु मैथिलवचनेन ।

पण्डित– (सूनि) साधु गीतम् कोऽमपरजयदेवः ?

लकड़हारा– तच्छ्रूयताम–

विद्वद्वंशबतंसितःसुचरितिस्तातो भवेशाभिधो,
ज्येष्ठा यस्य पुरन्दरप्रभृतयः षट्शास्त्रपारङ्गमाः ।
लब्धाः शैशव एव येन सकला विद्या प्रभाशालिना,
तेनाकारिबुधेन कृष्णकविना श्रीगीतगोपीपतिः ।।

पण्डित– वाह रे ! मिथिला, जहाँ ऐसे–ऐसे पण्डित हो गये हैं । यह लकड़िहारा है वा महामहोपाध्याय है ? देववाणी किस पवित्रता से उच्चारण कर रहा है, यद्यपि पूछने का तो साहस नही होता है तो भी कुछ पूछें ।

[एक दिशसँ एक बोझ घास लेने घसिहारा प्रवेश कै गबैत अछि]

चम्पकचर्चितचम्पमुदञ्चितकेशरसुकृततुणीरम् ।
मधुकरनिकरकठोरकवचचय–परिचितचारुशरीरम् ।।
जनुरनुरञ्जय पश्य वसन्तम् ।
विकचवकुलकुलसङ्कुलकानन–कुसुममिषेण हसन्तम् ।
सरसिजसौरभसुभगसमीरण–समुदितपथिकविषादम् ।।
विकसितकिंशुककुसुममसमशरविशिखविलासनिनादम्
कोकिलकलरवकपटलताताति–विरचितमृडितनिनादम् ।
विकसितकिंशुककुसुममसमशरविशिखविलासनिनादम्
युवतिमानमधुपान–समुन्नत–रसनामिव बिभ्राणम् ।।
अविरलनवजलसिन्धुरबन्धुर–कुसुमितबालतमालम् ।
त्रुटितरजनिघटिकाविघिटितकण–कोमल मधुकरजालम् ।।
तरुणलवङ्गरसालविचित्रित–विविधकुसुमकमनीयम् ।
मदनापणमिव दिशि निहितं नानामणिरमणीयम् ।।
रतिपतिरथपथद्वारतारतर – केतकमञ्जुनिकुञ्जम् ।
स्मरनटनाटनपतितमुकुटमणि–पटुतर–पाटल–पुञ्जम् ।।

यामवतीयुवतीजनकर्षण–शिथलित–दिनकरयानम् ।

विरहिविदारणवहलतमःश्रम–विहितहिमानीयानम् ।।

भानुदत्तकविरुत – मधुवर्णनममृतद्रवसं काशम् ।

रचयतु गोरीनयननिषेवित – पुरहरहृदयविकाशम् ।।

पण्डित– (**स्वगत**) अरे ! इस देश में संस्कृत ही के गान का प्रचार है क्या ? भला देखो तो यह घसिहारा ने भी क्या ही शुद्धता से इस संस्कृत गीत को गाया । गीत भी गीतगोविन्द की अनुच्छाया पर क्या ही उत्तम है । (**प्रकाश**) 'कोऽयं गीतस्य रचयिता ?'

घसिहारा– भानोर्गीतं सुधास्फीतं शम्भोर्डमरुडिण्डिमः ।

विदुषां रसपारङ्गभुवि भारति नृत्यताम् ।।

पण्डित– वाह वाह, वह जयदेव एक गीतगोविन्दकाव्य रचना से समस्त भूमण्डल में यशस्वी बने, यहाँ तो वैसे वैसे कितने जयदेव हो गये, जिनके रचित गीत गलीगली में गँवार सब भी गाते फिरते हैं । (कुछ सोचकर) ऐसे ऐसे से कुछ संस्कृत ही में तो बातें करूँ (प्रकाश) ।

अध्यापकनिवासस्तु कियद्दूरं प्रवर्त्तते ?

घसिहारा– अध्यापका उपाध्याया ह्यसंख्या मिथिलाभुवि ।।

पं०– (**स्वगत**) देखो तो इसका पाण्डित्य ! (**प्रकाश**) वाह रे मिथिला, अब विशेष संस्कृत में बातें करना व्यर्थ है ।

घसिहारा– क्या महाराज ! आप पण्डित हैं ?

पण्डित– मैं पण्डित नहीं हूँ, तो तुझसे संस्कृत पद्य ही में बात क्यों किया ?

लकड़िहारा– हाँ महाराज ! मैं भी समझा कि आप पण्डित हैं, यह घसिहारा भी पण्डित है, दोनों हमारे विचार से तुल्य ही हैं ।

पण्डित– (**स्वगत**) यह तो व्यङ्ग–कथा कहता है । (**प्रकाश**) मैं और यह तुल्य कैसे हुये जी ?

लकड़िहारा– आप कहते हैं पण्डित हैं, क्या ज्यौतिषशास्त्र में रेखागणित अध्ययन नहीं किया है ?

पण्डित– (**स्वगत**) यह क्या कहता है ? (**प्रकाश**) हम जानते वा नहीं, इससे क्या?

लकड़िहारा– रेखागणित की परिभाषा के अनुसार आप और यह तुल्य हैं; क्योंकि आप संस्कृत पद्य में प्रश्न किया और उसने भी संस्कृत पद्य ही में उत्तर दिया, इस लिये दोनों तुल्य हुए ।

घसिहारा– नहीं नहीं, हम उनसे बढ़े हुए हैं ।

लकड़िहारा– सो क्यों भाई ?

घसिहारा– यह पोथी का गट्ठर दूरदेश लादे फिरते हैं, मैं मिथिला में घास काटता हूँ।

लकड़िहारा– हाँ भाई ! सच है ।

पण्डित– (**स्वगत**) अब तो बड़ा कठिन हुआ । यहाँ के लकड़िहारा–घसिहारे की बातें तो सुनो ! (**प्रकाश**) तू क्या कह रहा है, तू घसियारा ही रहेगा, मैं पण्डित ही रहूँगा ।

लकड़िहारा– हाँ महाराज ! हमारे देश में कुम्हार भी पण्डित कहलाता है ।

घसिहारा– हाँ भाई ! सच कहते हो ।

पण्डित– तुम सब नीच होकर ऐसी बातें मत करो ।

लकड़िहारा– हाँ महाराज ! आप सच कहते हैं, यह चूक क्षमा करें ।

पण्डित– हम ऐसे ऐसे को क्षमा ही करते हैं ।

लकड़िहारा– महाराज ! कल्ह हमारे गाम के समीपवर्त्ती गाम में एक किसान की स्त्री ने अपने स्वामी की छींका होने पर एक श्लोक पढ़ा, उसका आशय मुझे मालूम नहीं हुआ; भला, आप कृपा कर आशय तो कहें ।

पण्डित– (**स्वगत**) यह किस चातुरता से प्रश्न करता है । (**प्रकाश**) भला; कैसा पद्य था ?

लकड़िहारा–

क: खे भाति हतो निशाचरपति: केनाम्बुधौ मज्जति,
क: कीदृक् तरुणीविलासगमने किं कुर्वते सज्जन: ।
किं पत्रं नृपते: किमर्जुनधनु: को रामवाणाहत:,
मत्प्रश्नोत्तरमध्यमाक्षरपदं भूयात् तवाशीर्वच: ।।

पण्डित– (**स्वगत**) देखो तो इस देश के किसान की स्त्री भी ऐसा ऐसा श्लोक जानती है । इसी से अनुभव होता है कि मण्डनमिश्र की स्त्री तथा लखिमा इत्यादि बड़ी–बड़ी विदुषी मिथिला में हो गई हैं । वाह रे मिथिला ! धन्य तेरे देश के मनुष्य ।

घसिहारा– अरे भाई ! तुम पण्डित को और मुझे बराबर समझते थे, जबतक वे सोचते हैं तबतक हमसे उत्तर सुनो ।

लकड़िहारा– (**आँखि घुमाय**) तू क्या उत्तर कहेगा, पण्डितजी को कुछ सोचने तो दे ।

घसिहारा– (**किछु काल रहि पण्डितसँ**) पण्डितजी ? आप उत्तर कहें तो अच्छा, नहीं तो मैं कह दूँ ?

पण्डित– तुम कहो तो; भला, शुद्धाशुद्ध तो बिचारने से जानेंगे ।

घसिहारा– इस श्लोक में जो प्रश्न उसके उत्तर के मध्यमाक्षर से "हे मे नाथ चिरं जीव" होता है । आप और लकड़िहारा बिचार लेवें ।

लकड़िहारा– भाई ! तुमने ठीक कहा । (**पण्डित सँ**) पण्डितजी ! आप खूब निश्चिन्त में इसका विचार कीजियेगा (**कहि हँसैये**) ।

घसिहारा– भाई ! क्या अब भी हम उनके बराबर ही रहे ?

लकड़िहारा– जाने दो, यह पण्डित कहाकर मिथिला में आये हैं । (स्वगत) आब साँझ होबै चाहैत अछि । जारन बिकैलो चाहै । गप्पहिमे दिन बिताओल । जैबाक चाही । (**कहि जाइत जाइत घसिहारासँ इसारा करैत अछि**) ।

घसिहारा– पण्डितजी ! अब दिनान्त हुआ, चलिये न, इसी गाम में किसी महामहोपाध्याय के घर रहकर आराम कीजियेगा, और इस अर्थ की समीचीनता का चिन्तन भी कीजियेगा ।

पण्डित– (**स्वगत**) इस ग्राम में कितने महामहोपाध्याय हैं । (**प्रकाश**) हम तो भाँगबूटी से फरागत नहीं हुए हैं । तुम को जाना हो तो जाओ । भला, पण्डित का नाम और पाठशाला का ठिकाना कह दो, जो उनकी जिज्ञासा में सुलभ हो ।

घसिहारा– मैं कितनी पाठशाला और पण्डित का ठिकाना बताऊँ ? यहाँ तो ग्राम

प्रवेश का जितना मार्ग है, सब के समीप एक–एक पाठशाला और अतिथिशाला है ।

पण्डित– (**स्वगत**) धन्य मिथिला ! इसी से तो लकड़िहारा घसिहारा भी पण्डित हैं । (**प्रकाश**) भला, एक तो कहो ।

घसिहारा– आप इसी मार्ग से ज्योंही ग्राम प्रवेश करेंगे प्रथम पाथशाला ही मिलेगी । वहीं ठहर जाइयेगा ।

पण्डित– अच्छा अच्छा, तुम भी जाओ ।

घसिहारा– हमसे जो अनुचित हुआ, उसे भुला दीजियेगा (**कहि नमस्कार करैत अछि**)।

पण्डित– अच्छे रहो, कुछ चूक नहीं, जाओ जाओ ।

[घसिहारा–लकड़िहारा मिलि]

लकड़िहारा– सङिता ! देखलह हिनक पण्डिताइ ? की गुप्तवेषें बूझि लेलिऐन्हि ।

घसिहारा– खूब उल्लू बनलाह, भरिसक त ई पाठशाला पर जैबो नहि करताह । भला, नुकाय कै देखबाक चाही जे की करैत अछि (**दूनू सैह करैछ** ।)

पण्डित– (**गठरी उठाय**) जिस मिथिला के लकड़िहारा घसिहारा पद्य में वार्तालाप करे, जिस मिथिला में किसान की स्त्री ऐसा ऐसा अन्तर्लापिका–श्लोक जाने, जिसका आशय मुझे कुछ भी मालूम नहीं हुआ, वहाँ के पण्डितों से शास्त्र का विचार करना हास्यास्पद होना है । इससे सीधे घर का राह लेना उचित है (**कहि जाइत छथि**) ।

लकड़िहारा– (**हँसि कै**) हौ सङिता ! देखलह, तेहन भय भेलन्हि जे पड़ैबे कैलाह ।

घसिहारा– हौ ! एहि मिथिलाक पक्ष रखनिहारि भगवती जगदम्बा छथि ई हुनके कृपाक फल बुझह ।

लकड़िहारा– से तँ सत्य, परन्तु बाबू ! आब मिथिलाक नाम रहब कठिन भेल जाइछ ।

घसिहारा– ई सब कलियुगक प्रभाव थिकैक, की करबहक । फेरि मिथिला मिथिले थिकिहि । चलह चलह, ई गप्प पढुआ बाबूकै कहिओन्हिगऽ (**कहि दूनूक गमननाट्य**)

[यवनिकापतन ।]